चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| | 19-3-24 | | |

# THE TIMES OF INDIA

INDIA'S LARGEST ENGLISH NEWSPAPER

## 'Farm drones to cut cost, save resources'

**Kumar Mukesh** | TNN

**Hisar:** Drones were the star attraction of Haryana Agricultural University's kharif fair on Monday here, and even vice-chancellor B R Kamboj said the UAV technology will help address the sector's labour shortage, cut cost, and save resources. Two more vice-chancellors — Suresh Kumar Malhotra from Karnal's Maharana Pratap Udyan University and Narsi Ram Bishnoi from Hisar's Guru Jambheshwar Science and Technology University were special guests. Farm drones were the fair's main theme, while 40,000 farmers from Haryana and several other states were among the first day's visitors.

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| | 19.3.24 | 2 | 1-5 |

**दैनिक भास्कर**


**कृषि मेला** • कीटनाशक का बचता है खर्च, मित्र कीटों के बचने से उत्पादन पर भी नहीं पड़ता फर्क

# 18 साल से धान, बाजरा और गेहूं की जहरमुक्त खेती कर रहा जींद जिले का किसान वजीर, अब दस गावों के 250 किसान भी जुड़े

यशपाल सिंह | हिसार

हिसार | एचएयू में किसानों को सम्मानित करते हुए।

जींद जिले के गांव मोहनगढ़ छापड़ा के प्रगतिशील किसान वजीर सिंह साल 2006 से जहरमुक्त खेती कर रहे हैं। जींद में कृषि विभाग में कृषि विशेषज्ञ के पद पर सेवाएं दे चुके डॉ. सुरेंद्र दलाल के मॉडल के अनुसार उन्होंने 18 साल पहले मित्र कीटों को बचाने के लिए खेती आरंभ की थी। वे 10 एकड़ में गेहूं, धान, कपास व बाजरा की जहरमुक्त खेती कर रहे हैं। कीटनाशकों का बिल्कुल इस्तेमाल नहीं कर रहे हैं। एचएयू के कृषि मेले में उनको कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने सम्मानित किया। 2006 में उन्होंने जहरमुक्त खेती आरंभ की थी, धीरे-धीरे उनसे अब तक आसपास के 10 गांवों के 250 किसान जुड़ चुके हैं।

प्रगतिशील किसान वजीर ने बताया कि जहरमुक्त खेती करने से कीटनाशक का पूरा खर्च बचता है। उत्पादन भी ज्यादा कम नहीं रहता। उनका कपास का औसतन पैदावार 8 से 10 क्विंटल प्रति एकड़ रहता है। वे पौधों की खुराक के लिए आधा किलो जिंक, ढाई किलो यूरिया और ढाई किलो डीएपी का छिड़काव जरूरत पौधों पर करते हैं।

## एक्सपर्ट व्यू

डॉ. रमेश कुमार, डायरेक्टर रिसर्च, एमपीएचयू, करनाल।

### मित्र कीटों को बचाना जरूरी

*फसलों में मित्र कीट होते हैं, इनको बचाना जरूरी है। किसान अनजाने में कीटनाशकों का प्रयोग करके इनको भी समाप्त कर देते हैं। मित्र कीट प्रांगकण में भी सहायक होते हैं। मांसाहारी मित्र कीट दूसरे हानिकारक कीटों को भी खाते हैं, जिससे फसलों को नुकसान नहीं पहुंचने देते। इसलिए किसानों को मित्र कीटों की पहचान होना जरूरी है।*

## 40 हजार किसानों ने लिया भाग

कृषि मेला खरीफ में पहले दिन हरियाणा व अन्य राज्यों से 40 हजार किसानों ने भाग लिया। मेले के पहले दिन में किसानों ने 21.08 लाख रुपए के खरीफ फसलों व सब्जियों की उन्नत व सिफारिशशुदा किस्मों के प्रमाणित बीज तथा 46 हजार 600 रुपए के फलदार पौधे व सब्जियों के बीज खरीदे। बीज के अलावा किसानों ने 6500 रुपए के जैव उर्वरक तथा 13 हजार रुपए का कृषि साहित्य भी खरीदा। 168 किसानों ने मिट्टी-पानी के सैंपल टेस्ट करवाए।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| दैनिक भास्कर | 19.3.24 | 4 | 3-5 |


**पहला दिन** • एचएयू में कृषि मेला के शुभांरभ पर बोले कुलपति प्रो. बीआर कॉम्बोज

# ड्रोन तकनीक से कृषि लागत कम होगी

## कृषि मेले में नई तकनीकों से रूबरू हुए हजारों किसान

भास्कर न्यूज़ | हिसार

बदलते समय के साथ-साथ अगर हमें कृषि क्षेत्र में कृषि क्रियाओं को समयानुसार क्रियान्वित करने से जुड़ी चुनौतियों व श्रमिकों की कमी को देखते हुए ड्रोन तकनीक को अपनाना होगा। इस तकनीक को अपनाने से कृषि लागत को कम करने के साथ-साथ संसाधनों की भी बचत की जा सकती है। यह विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय की तरफ से आयोजित कृषि मेला खरीफ के शुभारंभ अवसर पर बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मेले में विशिष्ट अतिथि के रूप में महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय, करनाल के कुलपति डॉ. सुरेश कुमार मल्होत्रा और गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई मौजूद रहे। इस बार मेले का मुख्य विषय खेती में ड्रोन का महत्व है।

मुख्यातिथि प्रो. बीआर काम्बोज ने आह्वान किया कि कृषक समुदाय को नई-नई तकनीकों व प्रौद्योगिकियों के बारे में समयानुसार अपडेट करते रहना समय की मांग है। उन्होंने कहा कि खेती में ड्रोन तकनीक का महत्व तेजी से बढ़ता जा रहा है। आज के दौर में खाद्य सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन व पर्यावरण को संरक्षित रखना मुख्य चुनौतियां हैं। साथ ही किसानों द्वारा फसलों में कीटनाशक दवाइयों का अधिक प्रयोग करने से इंसान अनेक बीमारियों की चपेट में भी आ रहा है। उपरोक्त चुनौतियों से निपटना है तो किसानों को ड्रोन तकनीक को अपनाना होगा। ड्रोन के द्वारा कम समय में जल विलय उर्वरक, कीटनाशक, खरपतवार नाशक का छिड़काव समान तरीके से व सिफारिश के अनुसार आसानी से किया जा सकता है, जिससे कम लागत होने के साथ-साथ संसाधनों की भी बचत होगी।

**हिसार** | कृषि मेले में आर्य नगर गुरुकुल के छात्रों ने मलखंब का प्रदर्शन किया। स्टॉलों पर जानकारी लेते किसान।

### धान की पराली को न जलाएं किसान, भूमि की उर्वरा शक्ति होती है कम : प्रो. बिश्नोई

जीजेयू के कुलपति प्रो. नरसीराम बिश्नोई ने बताया कि फसलों की अधिक पैदावार लेने के लिए पर्यावरण का अनुकूल होना जरूरी है। उन्होंने कहा कि हमें फसलों के अवशेष जैसे धान की पराली को नहीं जलाना चाहिए। क्योंकि पराली जलाने से एक ओर भूमि की उपजाऊ शक्ति कम होती वहीं दूसरी ओर मित्र कीट एवं लाभदायक जीवाणु भी नष्ट हो जाते हैं। यदि फसल के अवशेष जलाने की बजाय किसान उन्हें खेत में ही समायोजित करें तो भूमि की उपजाऊ शक्ति बनी रहेगी व पर्यावरण संरक्षण होगा।

### तिलहनी व दलहनी फसलों का उत्पादन मांग से कम, करना पड़ रहा आयात : सुरेश

महाराणा प्रताप उद्यान विवि, करनाल के वीसी डॉ. सुरेश कुमार मल्होत्रा ने बताया कि हरियाणा का किसान प्रगतिशील किसान है। अपने प्रयासों की बदौलत वह अन्य राज्यों के किसानों, प्रौद्योगिकियों व नवाचारों के मुकाबले में सबसे आगे हैं। तिलहनी व दलहनी फसलों की मांग के मुकाबले उत्पादन कम है, इसके कारण आयात करना पड़ता है। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने बताया कि किसानों को विवि के अनुसंधान फार्म का भ्रमण करवा वैज्ञानिक विधि से उगाई फसलें दिखाईं।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| दैनिक ट्रिब्यून | 19.3.24 | 3 | 1-5 |


## हकृवि में खरीफ कृषि मेला शुरू, आज होगा समापन

# ड्रोन से कृषि लागत कम होगी, संसाधनों की भी बचत : काम्बोज

हिसार, 18 मार्च (हप्र)

बदलते समय के साथ-साथ कृषि क्षेत्र में कृषि क्रियाओं को समयानुसार क्रियान्वित करने व श्रमिकों की कमी को देखते हुए ड्रोन तकनीक को अपनाना होगा। इस तकनीक को अपनाने से कृषि लागत को कम करने के साथ-साथ संसाधनों की भी बचत की जा सकती है। यह बात चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने सोमवार को विश्वविद्यालय के खरीफ कृषि मेला के शुभारंभ अवसर पर बतौर मुख्यातिथि संबोधित करते हुए कही। मेले में विशिष्ट अतिथि के रूप में महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय, करनाल के कुलपति डॉ. सुरेश कुमार मल्होत्रा और गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई मौजूद रहे। इस बार मेले का मुख्य विषय खेती में ड्रोन का महत्व है। कृषि मेला खरीफ में पहले दिन हरियाणा व अन्य राज्यों से करीब 40 हजार किसानों ने भाग लिया।

हिसार में सोमवार को आयोजित मेले में ड्रोन तकनीक के प्रदर्शन को देखते मुख्यातिथि सहित अन्य अधिकारीगण। -हप्र

मुख्यातिथि प्रो. बीआर काम्बोज ने आह्वान किया कि कृषक समुदाय को नई-नई तकनीकों व प्रौद्योगिकियों के बारे में समयानुसार अपडेट करते रहना समय की मांग है। उन्होंने कहा कि खेती में ड्रोन तकनीक का महत्व तेजी से बढ़ता जा रहा है। क्योंकि आज के दौर में खाद्य सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन व पर्यावरण को संरक्षित रखना मुख्य चुनौतियां है। साथ ही किसानों द्वारा फसलों में कीटनाशक दवाइयों का अधिक प्रयोग करने से इंसान अनेक बीमारियों की चपेट में भी आ रहा है। उपरोक्त चुनौतियों से निपटना है तो किसानों को ड्रोन तकनीक को अपनाना होगा। क्योंकि ड्रोन के द्वारा कम समय में जल विलय उर्वरक, कीटनाशक, खरपतवार नाशक का छिड़काव समान तरीके से व सिफारिश के अनुसार आसानी से किया जा सकता है, जिससे कम लागत होने के साथ-साथ संसाधनों की भी बचत होगी।

महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय, करनाल के कुलपति डॉ. सुरेश कुमार मल्होत्रा ने बताया कि हरियाणा का किसान प्रगतिशील किसान है। अपने प्रयासों की बदौलत वह अन्य राज्यों के किसानों, प्रौद्योगिकियों व नवाचारों के मुकाबले में सबसे आगे है। इसलिए किसान खाद्य सुरक्षा, खाद्य भंडारण, जलवायु परिवर्तन व पर्यावरण संरक्षण जैसी अनेक चुनौतियों का हल निकालने में अपनी अहम भूमिका अदा कर सकता है।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| पंजाब केसरी | 19.3.24 | 3 | 5-8 |


# किसानों को समझाया ड्रोन तकनीक का महत्व

हिसार, 18 मार्च (राठी): बदलते समय के साथ-साथ अगर हमें कृषि क्षेत्र में कृषि क्रियाओं को समयानुसार क्रियान्वित करने से जुड़ी चुनौतियों व श्रमिकों की कमी को देखते हुए ड्रोन तकनीक को अपनाना होगा। इससे कृषि लागत को कम करने के साथ-साथ संसाधनों की भी बचत की जा सकती है। यह विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहे। कार्यक्रम के दौरान मुख्यातिथि ने कृषि क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया। कृषि मेला खरीफ में पहले दिन हरियाणा व अन्य राज्यों से करीब 40 हजार किसानों ने भाग लिया।

वे विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित कृषि मेला (खरीफ) के शुभारंभ अवसर पर बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मेले में विशिष्ट अतिथि के रूप में महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय, करनाल के कुलपति डॉ. सुरेश कुमार मल्होत्रा और गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई मौजूद रहे। इस बार मेले का मुख्य विषय खेती में ड्रोन का महत्व है।

मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि खेती में ड्रोन तकनीक का महत्व तेजी से बढ़ता जा रहा है। क्योंकि आज के दौर में खाद्य सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन व पर्यावरण को संरक्षित रखना मुख्य चुनौतियां है। साथ ही किसानों द्वारा फसलों में कीटनाशक दवाइयों का अधिक प्रयोग करने से इंसान अनेक बीमारियों की चपेट में भी आ रहा है। उपरोक्त चुनौतियों से निपटना है तो किसानों को ड्रोन तकनीक को अपनाना होगा।

मुख्यातिथि प्रो. काम्बोज ने विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की भी प्रशंसा करते हुए कहा कि वे विभिन्न फसलों की उन्नत 44 किस्में अनुमोदित किया गया है। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा इजाद की गई अधिक पैदावार देने वाली किस्म, जिनमें सरसों की रोग प्रतिरोधी व पाले के प्रति सहनशील किस्म आरएच 725, गेहूं की अधिक उत्पादकता देने वाली किस्म डब्ल्यूएच 1270 सहित अन्य किस्म के बारे में भी बताया। महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय, करनाल के कुलपति डॉ. सुरेश कुमार मल्होत्रा ने कहा कि किसान खाद्य सुरक्षा, खाद्य भंडारण, जलवायु परिवर्तन व पर्यावरण संरक्षण जैसी अनेक चुनौतियों का हल निकालने में अपनी अहम भूमिका अदा कर सकता है। गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने बताया कि फसलों की अधिक पैदावार लेने के लिए पर्यावरण का अनुकूल होना जरूरी है। हमें फसलों के अवशेष जैसे धान की पराली को नहीं जलाना चाहिए। फसल के अवशेष जलाने की बजाय किसान उन्हें खेत में ही समायोजित करें तो भूमि की उपजाऊ शक्ति बनी रहेगी व पर्यावरण संरक्षण होगा।

*मेले में ड्रोन तकनीक के प्रदर्शन को देखते मुख्यातिथि सहित अन्य अधिकारीगण।*

## किसानों ने नई तकनीक व कृषि यंत्रों में दिखाई रुचि

कृषि मेले में किसानों ने फसलों की नई वैरायटी को लेकर जानकारियां हासिल की। कृषि वैज्ञानिकों से फसलों की देखभाल, सिंचाई बारे जानकारी हासिल की। मेले में गोभी, आलू सहित कई तरह की सब्जियों व फूलों की वैरायटी को प्रदर्शित किया गया। कृषि यंत्रों बारे जानकारियां ली गई। वहीं मेले में महिलाएं काफी संख्या में पहुंची। मेले के पहले दिन में किसानों ने करीब 21.08 लाख रुपए के खरीफ फसलों व सब्जियों की उन्नत व सिफारिशशुदा किस्मों के प्रमाणित बीज तथा करीब 46 हजार 600 रुपए के फलदार पौधे व सब्जियों के बीज खरीदे। वहीं किसानों ने विश्वविद्यालय की ओर से मिट्टी व पानी जांच के लिए की गई व्यवस्था का भी लाभ उठाया और कुल 168 नमूने टैस्ट करवाए।

## अधिकारियों ने किया प्रदर्शनी का अवलोकन

कृषि मेला खरीफ में विश्वविद्यालय के समस्त महाविद्यालयों की ओर से विभिन्न विषयों पर कृषि प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी लगाई गई, जिसमें विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में सहित आधुनिक तकनीकों व कृषि यंत्र शामिल रहे। मुख्यातिथि सहित अन्य अधिकारीगणों ने प्रदर्शनियों का अवलोकन किया। इस प्रदर्शनी में कृषि क्षेत्र से जुड़ी समस्याओं के हल के लिए कृषक-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम भी रखा गया।

# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| | 19.3.24 | 2 | 5-8 |

अमर उजाला


कृषि मेला — **एचएयू में आयोजित कृषि मेले में पहुंचे 40 हजार किसान, 44 प्रगतिशील किसानों को मिला सम्मान**

# खेती में ड्रोन तकनीक अपनाएं किसानः प्रो. कांबोज

**हिसार।** चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के दो दिवसीय कृषि मेले में मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा कि खेती में ड्रोन तकनीक का महत्व तेजी से बढ़ रहा है। खाद्य सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन, पर्यावरण को संरक्षित रखने, फसलों में कीटनाशक के प्रयोग की चुनौतियों से निपटने के लिए किसानों को नई तकनीकों को अपनाना ही होगा। ड्रोन के द्वारा कम समय में जल विलय उर्वरक, कीटनाशक, खरपतवार नाशक का छिड़काव समान तरीके से, सिफारिश के अनुसार आसानी से किया जा सकता है। इससे कम लागत होने के साथ-साथ संसाधनों की भी बचत होगी। मेले में 44 प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया गया।

मेले में पहले दिन हरियाणा, दिल्ली, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश समेत अन्य राज्यों से करीब 40 हजार किसान पहुंचे। करीब 21.08 लाख रुपये के खरीफ फसलों के बीज, करीब 46600 रुपये के फलदार पौधे व सब्जियों के बीज खरीदे गए। ब्यूरो

हिसार किसानों को सम्मानित करते मुख्य अतिथि व अन्य अधिकारीगण।

■ **इन्होंने किया किसानों को सम्मानितः** विशिष्ट अतिथि महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय करनाल के कुलपति डॉ. सुरेश कुमार मल्होत्रा, गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया।

## किस जिले के किन किसानों को मिला सम्मान (नूंह-झज्जर का कोई किसान शामिल नहीं)

**हिसारः** गांव पायल निवासी राजेश, गांव लोहारी राघो निवासी रजनी, गांव चिड़ौद निवासी मंदीप, गांव कोहली निवासी ओमप्रकाश, हांसी के ढाणा कलां निवासी किरण यादव।

**कैथल :** गांव अहूं निवासी नफे सिंह, गांव जाखोली निवासी सुनीता।

**पलवल :** सरौली निवासी कुमारी अंजू, औरंगाबाद निवासी दीपेश चौहान।

**भिवानी :** धनाना निवासी सुरेंद्र कुमार, गोपालवास निवासी कविता।

**फरीदाबाद :** सहयवक निवासी नरेश शर्मा, नरियाला निवासी गीता देवी।

**कुरुक्षेत्र :** अमीन निवासी अश्विनी कुमार, ज्योतिसर निवासी शरणजीत कौर।

**जींद :** गांव बधाना निवासी निर्मला, मोहनगढ़ छापड़ा निवासी वजीर।

**करनाल :** गांव सदरपुर निवासी कुलदीप, घरौंडा निवासी निर्मला देवी।

**सोनीपत :** सिसाना निवासी भगवान, भैरा बांकीपुर निवासी रूबी।

**फतेहाबाद :** चौबारा निवासी भूपसिंह, गांव हसंगा निवासी विद्या देवी।

**महेंद्रगढ़ :** आकोदा निवासी सवरन, गांव भोजावास निवासी उषा देवी।

**अंबाला :** धुराला निवासी खुशप्रीत सिंह, अंबाला सिटी निवासी रेनू बाला।

**रोहतक :** लाखनमाजरा निवासी मानता शर्मा, महम निवासी अनुज।

**यमुनानगर :** मिल्कडा निवासी सोमनाथ, कुंजल निवासी रेखा रानी।

**सिरसा :** सुल्तानपुरिया निवासी सुखविंद्र सिंह, डिंग निवासी वसुंधरा बंसल।

**पंचकूला :** बडियाल निवासी वीरेंद्र सिंह, बेरघाटी निवासी कमलेश।

**रेवाड़ी :** गांव गिन्दोखर निवासी सुरेश चंद, बनीपुर निवासी सुमन।

**पानीपत :** गांव दिवाना निवासी जोगेंद्र सिंह, उंझा निवासी अनुराधा।

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
| --- | --- | --- | --- |
| दैनिक जागरण | 19.3.24 | 4 | 1-6 |

# खेती में बढ़ता जा रहा ड्रोन तकनीक का महत्व : प्रो. काम्बोज

## हकृवि में कृषि मेला के शुभारंभ पर कुलपति ने कहा- ड्रोन तकनीक से लागत के साथ संसाधनों की भी होती है बचत

जागरण संवाददाता, हिसार : बदलते समय के साथ हमें कृषि क्रियाओं को समयानुसार क्रियान्वित करने से जुड़ी चुनौतियों व श्रमिकों की कमी को देखते हुए ड्रोन तकनीक को अपनाना होगा। इससे कृषि लागत को कम करने के साथ-साथ संसाधनों की भी बचत की जा सकती है। यह विचार कृषि मेला (खरीफ) में मुख्य अतिथि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहे। मेले में विशिष्ट अतिथि के रूप में महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय करनाल के कुलपति डा. सुरेश कुमार मल्होत्रा और गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई मौजूद रहे। इस बार मेले का मुख्य विषय खेती में ड्रोन का महत्व है।

प्रो. काम्बोज ने कहा कि खेती में ड्रोन तकनीक का महत्व तेजी से बढ़ता जा रहा है। आज के दौर में खाद्य सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन व पर्यावरण को संरक्षित रखना मुख्य चुनौतियां है। साथ ही किसानों द्वारा फसलों में कीटनाशक दवाइयों का अधिक प्रयोग करने से इंसान अनेक बीमारियों की चपेट में भी आ रहा है। उपरोक्त चुनौतियों से निपटना है तो किसानों को ड्रोन तकनीक को अपनाना होगा। ड्रोन के द्वारा कम समय में जल विलय उर्वरक, कीटनाशक, खरपतवार नाशक का छिड़काव समान तरीके से व सिफारिश के अनुसार आसानी से किया जा सकता है, जिससे कम लागत होने के साथ-साथ संसाधनों की भी बचत होगी।

प्रो. काम्बोज ने कहा कि वे विभिन्न फसलों की उन्नत 44 किस्में अनुमोदित व विकसित कर कृषक समुदाय को आर्थिक मजबूती देने का काम कर रहे हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय द्वारा ईजाद की गई अधिक पैदावार देने वाली किस्म, जिनमें सरसों की रोग प्रतिरोधी व पाले के प्रति सहनशील किस्मों की जानकारी दी।

उद्यान विश्वविद्यालय करनाल के कुलपति डा. सुरेश कुमार मल्होत्रा ने बताया कि हरियाणा का किसान प्रगतिशील है। अपने प्रयासों की बदौलत वह अन्य राज्यों के किसानों, प्रौद्योगिकियों व नवाचारों के मुकाबले में सबसे आगे हैं। इसलिए किसान खाद्य सुरक्षा, खाद्य भंडारण, जलवायु परिवर्तन व पर्यावरण संरक्षण जैसी अनेक चुनौतियों का हल निकालने में अपनी अहम भूमिका अदा कर सकता है।

गुजवि के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने बताया कि फसलों की अधिक पैदावार लेने के लिए पर्यावरण का अनुकूल होना जरूरी है। उन्होंने यह भी कहा कि हमें फसलों के अवशेष जैसे धान की पराली को नहीं जलाना चाहिए।

इस दौरान प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया। उन्होंने दो पुस्तकों का विमोचन किया। मंच का संचालन हरियाणा कला परिषद हिसार मंडल के अतिरिक्त निदेशक रामनिवास शर्मा ने किया।

**44** किस्में विभिन्न फसलों की उन्नत कर किसानों को पहुंचा रहे लाभ

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित कृषि मेला खरीफ में आकर्षण का केंद्र रहे गुरुकुल आर्य नगर के बच्चे मलखंब योग के माध्यम से तिरंगा लहराते हुए ● गुलशन बजाज

### पहले दिन में 40 हजार किसान पहुंचे

हकृवि में चल रहे दो दिवसीय कृषि मेला खरीफ -2024 में पहले दिन हरियाणा सहित दिल्ली, पंजाब, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश राज्यों से करीब 40 हजार किसान शामिल हुए। पहले दिन में किसानों ने करीब 21.08 लाख रुपये के खरीफ फसलों व सब्जियों की उन्नत व सिफारिश शुदा किस्मों के प्रमाणित बीज तथा करीब 46 हजार 600 रुपये के फलदार पौधे व सब्जियों के बीज खरीदे। बीज के अलावा किसानों ने 6500 रुपये के जैव उर्वरक तथा 13 हजार रुपये का कृषि साहित्य भी खरीदा।

मेले में ड्रोन तकनीक के प्रदर्शन को देखते हुए मुख्यातिथि सहित अन्य अधिकारीगण ● जागरण

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में आयोजित कृषि मेला खरीफ में किसान गेहूं की फसल को देखते हुए ● जागरण

### किसानों को प्रदर्शन प्लांट दिखाए

विस्तार शिक्षा निदेशक डा. बलवान सिंह मंडल ने बताया कि मेले में किसानों को विश्वविद्यालय के अनुसंधान फार्म का भ्रमण करवाकर उन्हें वैज्ञानिक विधि से उगाई गई फसलो के प्रदर्शन प्लाट दिखाए जा रहे हैं। संयुक्त निदेशक विस्तार डा. कृष्ण कुमार यादव ने बताया कि मेले में लगाई गई कृषि-औद्योगिक प्रदर्शनी किसानों के आकर्षण का विशेष केन्द्र रही। इस प्रदर्शनी में कुल 248 स्टाल लगाए गए हैं।

हिसार की अन्य खबरें पढ़ने के लिए देखें www.jagran.com

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| सिटी पल्स न्यूज | 18.03.2024 | -- | -- |

# हकृवि द्वारा आयोजित कृषि मेला (खरीफ) का शुभांरभ

**सिटीपल्स न्यूज, हिसार।** बदलते समय के साथ- साथ अगर हमें कृषि क्षेत्र में कृषि क्रियाओं को समयानुसार क्रियान्वित करने से जुड़ी चुनौतियों व श्रमिकों की कमी को देखते हुए ड्रोन तकनीक को अपनाना होगा। इस तकनीक को अपनाने से कृषि लागत को कम करने के साथ-साथ संसाधनों की भी बचत की जा सकती है। यह विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित कृषि मेला (खरीफ) के शुभारंभ अवसर पर बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मेले में विशिष्ट अतिथि के रूप में महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय, करनाल के कुलपति डॉ. सुरेश कुमार मल्होत्रा और गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं

प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई मौजूद रहे। इस बार मेले का मुख्य विषय खेती में ड्रोन का महत्व है।

मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने आह्वान किया कि कृषक समुदाय को नई-नई तकनीकों व प्रौद्योगिकियों के बारे में समयानुसार अपडेट करते रहना समय की मांग है। उन्होंने कहा कि खेती में ड्रोन तकनीक का महत्व तेजी से बढ़ता जा रहा है। क्योंकि आज के दौर में खाद्य सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन व पर्यावरण को संरक्षित रखना मुख्य चुनौतियां है। साथ ही किसानों द्वारा फसलों में कीटनाशक दवाईयों का अधिक प्रयोग करने से इंसान अनेक बीमारियों की चपेट में भी आ रहा है।

उपरोक्त चुनौतियों से निपटना है तो किसानों को ड्रोन तकनीक को अपनाना होगा। क्योंकि ड्रोन के द्वारा कम समय में जल विलय उर्वरक, कीटनाशक, खरपतवार नाशक का छिड़काव समान तरीके से व सिफारिश के अनुसार आसानी से किया जा सकता है, जिससे कम लागत होने के साथ-साथ संसाधनों की भी बचत होगी।गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने बताया कि फसलों की अधिक पैदावार लेने के लिए पर्यावरण का अनुकूल होना जरूरी है। उन्होंने यह भी कहा कि हमें फसलों के अवशेष जैसे धान की पराली को नहीं जलाना चाहिए। क्योंकि पराली जलाने से एक ओर भूमि की उपजाऊ शक्ति कम होती वहीं दूसरी ओर मित्र कीट एवं लाभदायक जीवाणु भी नष्ट हो जाते है। यदि फसल के अवशेष जलाने की बजाय किसान उन्हें खेत में ही समायोजित करें तो भूमि की उपजाऊ शक्ति बनी रहेगी व पर्यावरण संरक्षण होगा।मुख्यातिथि सहित अन्य अधिकारियों ने कृषि प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी को सराहामहाविद्यालयों की ओर से विभिन्न विषयों पर कृषि प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी लगाई गई, जिसमें विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में सहित आधुनिक तकनीकों व कृषि यंत्र शामिल रहे। मुख्यातिथि सहित अन्य अधिकारीगणों ने प्रदर्शनियों का अवलोकन किया। साथ ही वैज्ञानिकों व विद्यार्थियों के प्रयासों को सराहा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| अमर उजाला | 19.3.24 | 2 | 1-8 |

**एचएयू में दो दिवसीय कृषि मेला : कुलपति प्रो. कांबोज बोले- नई तकनीक और प्रौद्योगिकियों को अपनाकर किसान खुद को रखें अपटेड**

# पहले दिन 40 हजार किसान पहुंचे, 21.08 लाख रुपये के खरीदे बीज

माई सिटी रिपोर्टर

**हिसार।** चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा कि किसानों को नई-नई तकनीकों व प्रौद्योगिकियों को अपनाते हुए समयानुसार खुद को अपडेट करते रहना होगा। वर्तमान समय में कृषि क्षेत्र के अंदर महिलाओं की भूमिका दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। प्रदेश में महिला किसानों को ड्रोन का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। महिलाओं को भी तकनीक का प्रशिक्षण लेना होगा तभी चुनौतियों का सामना कर पाएंगे। बदलते मौसम के अनुसार अधिक सतर्क होकर खेती करनी होगी।

दो दिवसीय कृषि मेला खरीफ-2024 में सोमवार को पहले दिन हरियाणा सहित दिल्ली, पंजाब, राजस्थान व उत्तर प्रदेश राज्यों से करीब 40 हजार किसान शामिल हुए। पहले दिन में किसानों ने करीब 21.08 लाख रुपये के फसलों, सब्जियों के बीज व करीब 46600 रुपये के पौधे सब्जियों की पौध खरीदी। किसानों ने 6500 रुपये के जैव उर्वरक व 13 हजार रुपये का कृषि साहित्य भी खरीदा। दो वैज्ञानिकों की पुस्तकों का विमोचन किया गया।

महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय करनाल के कुलपति डॉ. सुरेश कुमार मल्होत्रा ने कहा कि हरियाणा का प्रगतिशील किसान प्रौद्योगिकियों व नवाचारों को अपनाने में सबसे आगे है। इसलिए किसान खाद्य सुरक्षा, खाद्य भंडारण, जलवायु परिवर्तन व पर्यावरण संरक्षण जैसी अनेक चुनौतियों का हल निकालने में अपनी अहम भूमिका अदा कर सकता है। तिलहनी व दलहनी फसलों की मांग के मुकाबले उत्पादन कम है, जिसके कारण आयात करना पड़ता है। खरीफ एवं रबी सीजन के अलावा, रबी सीजन के तुरंत बाद आने वाली गर्मी के मौसम में एक कम अवधि वाली फसल लेकर खेती को लाभदायक बनाने के बारे में भी प्रेरित किया।

इस दौरान सरसों की रोग प्रतिरोधी व पाले के प्रति सहनशील किस्म आरएच 725, गेहूं की अधिक उत्पादकता देने वाली किस्म डब्ल्यूएच 1270 का जिक्र किया। खरीफ फसलों में चारे वाली ज्वार की अधिक पैदावार देने वाली सीएसवी 53 एफ व एचजे 1514, बाजरे की जिंक व लौह तत्व से भरपूर बायोफोर्टीफाइड किस्म एचएचबी 299 व एचएचबी 311 एवं मूंग की एमएच 421 किस्म के बारे में बताया।

कृषि मेले में प्रगतिशील महिला किसानों को सम्मानित करते मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. कांबोज व अन्य। संवाद

एचएयू में आयोजित कृषि मेले में लोकगीत पर प्रस्तुति देते कलाकार। संवाद

कृषि मेले में लगी स्टॉल पर जानकारी लेतीं छात्राएं। संवाद

## मेले में 248 स्टॉल लगाई

संयुक्त निदेशक विस्तार डॉ. कृष्ण कुमार यादव ने बताया कि मेले में कृषि-औद्योगिक प्रदर्शनी किसानों के आकर्षण का विशेष केंद्र रही। प्रदर्शनी में कुल 248 स्टॉल लगाए गई। मुख्य अतिथि व अन्य अतिथियों ने प्रदर्शनियों का अवलोकन किया। प्रदर्शनी में कृषि क्षेत्र से जुड़ी समस्याओं के हल के लिए कृषक-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम रखा गया। इसमें कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों ने की समस्याओं व सवालों के जवाब दिए। मंच संचालन रामनिवास शर्मा ने किया।

## फसलों के अवशेष जलाने से बचें : प्रो. बिश्नोई

गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने बताया कि फसलों की अधिक पैदावार लेने के लिए पर्यावरण का अनुकूल होना जरूरी है। हमें फसलों के अवशेष को नहीं जलाना चाहिए। पराली जलाने से एक ओर भूमि की उपजाऊ शक्ति कम होती वहीं दूसरी ओर मित्र कीट एवं लाभदायक जीवाणु भी नष्ट हो जाते हैं। यदि फसल के अवशेष जलाने की बजाय किसान उन्हें खेत में ही समायोजित करें तो भूमि की उपजाऊ शक्ति बनी रहेगी व पर्यावरण संरक्षण होगा।

## 168 ने मिट्टी-पानी के सैंपल टेस्ट कराए

किसानों को विश्वविद्यालय के अनुसंधान फार्म का भ्रमण करवाकर उन्हें वैज्ञानिक विधि से उगाई गई फसलों के प्रदर्शन प्लॉट दिखाए। किसानों ने विश्वविद्यालय की ओर से मिट्टी व पानी जांच के लिए की गई व्यवस्था का भी लाभ उठाया और उन्होंने कुल 168 नमूने टेस्ट करवाए। इनके अतिरिक्त किसानों ने प्रश्नोत्तरी सभाओं में भाग लेकर वैज्ञानिकों से कृषि व पशुपालन संबंधी अपनी समस्याओं एवं शंकाओं को दूर किया। हरियाणवी कलाकार विकास सातरोड़िया ने हरियाणवी गाने से मनोरंजन किया।

हिसार कृषि मेले में खेती में ड्रोन के महत्व को जानने के लिए लगी किसानों के साथ ड्रोन को देखते कुलपति। संवाद

करतब दिखाते समय मन भटका तो ड्रोन को अपनी ओर खींचने की कोशिश करता एक बच्चा। संवाद

कृषि मेले में कई चिलम वाले हुक्के को देखते लोग। यह हुक्का मेले में लोगों के आकर्षण का केंद्र बना रहा। फोटो : जागरूक पाठक

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

| समाचार पत्र का नाम | दिनांक | पृष्ठ संख्या | कॉलम |
|---|---|---|---|
| हरि भूमि | 19.3.24 | 12 | 2-8 |


## हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दो दिवसीय कृषि मेला (खरीफ) का शुभारंभ

# ड्रोन तकनीक को अपनाने से कृषि लागत को कम करने के साथ-साथ संसाधनों की भी बचत होगी : प्रो. काम्बोज

हरिभूमि न्यूज ›› हिसार

हिसार। मेले में ड्रोन तकनीक के प्रदर्शन को देखते हुए मुख्यातिथि सहित अन्य अधिकारीगण व हकृवि द्वारा आयोजित कृषि मेले में पहुंचे किसान।

फोटो: हरिभूमि

बदलते समय के साथ-साथ अगर हमें कृषि क्षेत्र में कृषि क्रियाओं को समयानुसार क्रियान्वित करने से जुड़ी चुनौतियों व श्रमिकों की कमी को देखते हुए ड्रोन तकनीक को अपनाना होगा। इस तकनीक को अपनाने से कृषि लागत को कम करने के साथ-साथ संसाधनों की भी बचत की जा सकती है। यह ज्ञात हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कही। वे विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित कृषि मेला (खरीफ) के शुभारंभ अवसर पर बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मेले में विशिष्ट अतिथि के रूप में महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय, करनाल के कुलपति डॉ. सुरेश कुमार मल्होत्रा और गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई मौजूद रहे। इस बार मेले का मुख्य विषय खेती में ड्रोन का महत्व है।

मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने आह्वान किया कि कृषक समुदाय को नई-नई तकनीकों व प्रौद्योगिकियों के बारे में समयानुसार अपडेट करते रहना समय की मांग है। उन्होंने कहा कि खेती में ड्रोन तकनीक का महत्व तेजी से बढ़ता जा रहा है। क्योंकि आज के दौर में खाद्य सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन व पर्यावरण को संरक्षित रखना मुख्य चुनौतियां है। साथ ही किसानों द्वारा फसलों में कीटनाशक दवाईयों का अधिक प्रयोग करने से इंसान अनेक बीमारियों की चपेट में भी आ रहा है। उपरोक्त चुनौतियों से निपटना है तो किसानों को ड्रोन तकनीक को अपनाना होगा। क्योंकि ड्रोन के द्वारा कम समय में जल विलय उर्वरक, कीटनाशक, खरपतवार नाशक का छिड़काव समान तरीके से व सिफारिश के अनुसार आसानी से किया जा सकता है, जिससे कम लागत होने के साथ-साथ संसाधनों की भी बचत होगी।

### कृषि प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी को सराहा

कृषि मेला खरीफ में विश्वविद्यालय के समस्त महाविद्यालयों की ओर से विभिन्न विषयों पर कृषि प्रौद्योगिकी प्रदर्शनी लगाईगई, जिसमें विभिन्न फसलों की उन्नत किस्में सहित आधुनिक तकनीकों व कृषि यंत्र शामिल रहे। मुख्यातिथि सहित अन्य अधिकारीगणों ने प्रदर्शनियों का अवलोकन किया। साथ ही वैज्ञानिकों व विद्यार्थियों के प्रयासों को सराहा।

### प्रगतिशील किसानों को किया सम्मानित

कार्यक्रम के दौरान मुख्यातिथि ने कृषि क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया। इसके अलावा उन्होंने दो पुस्तकों का विमोचन करते हुए संबंधित विभागों के वैज्ञानिकों को बधाई दी। कृषि मेला खरीफ में पहले दिन हरियाणा व अन्य राज्यों से करीब 40 हजार किसानों ने भाग लिया। मंच का संचालन हरियाणा कला परिषद, हिसार मंडल के अतिरिक्त निदेशक रामनिवास शर्मा ने किया। मेले में उपस्थित किसानों के मनोरंजन के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया।

### हरियाणा का किसान सबसे आगे : डॉ. मल्होत्रा

*महाराणा प्रताप उद्यान विश्वविद्यालय, करनाल के कुलपति डॉ. सुरेश कुमार मल्होत्रा ने बताया कि हरियाणा का किसान प्रगतिशील किसान है। अपने प्रयासों की बदौलत वह अन्य राज्यों के किसानों, प्रौद्योगिकियों व बदलावों के मुकाबले में सबसे आगे है। इसलिए किसान खाद्य सुरक्षा, खाद्य भंडारण, जलवायु परिवर्तन व पर्यावरण संरक्षण जैसी अनेक चुनौतियों का हल निकालने में अपनी अहम भूमिका अदा कर सकता है। तिलहनी व दलहनी फसलों की मांग के मुकाबले उत्पादन कम है, जिसके कारण आयात करना पड़ता है।*

### अधिक पैदावार के लिए पर्यावरण का अनुकूल होना जरूरी

*गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई ने बताया कि फसलों की अधिक पैदावार लेने के लिए पर्यावरण का अनुकूल होना जरूरी है। उन्होंने यह भी कहा कि हमें फसलों के अवशेष जैसे धान की पराली को नहीं जलाना चाहिए। क्योंकि पराली जलाने से एक ओर भूमि की उपजाऊ शक्ति कम होती वहीं दूसरी ओर मित्र कीट एवं लाभदायक जीवाणु भी नष्ट हो जाते है। यदि फसल के अवशेष जलाने की बजाय किसान उन्हें खेत में ही समायोजित करें तो भूमि की उपजाऊ शक्ति बनी रहेगी व पर्यावरण संरक्षण होगा।*

### हकृवि कृषि मेले में पहले दिन में करीब 40 हजार किसान हुए शामिल

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में चल रहे दो दिवसीय कृषि मेला खरीफ 2024 में सोमवार को पहले दिन किसानों की भारी गहमा-गहमी रही। मेले में पहले दिन हरियाणा सहित दिल्ली, पंजाब, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश राज्यों से करीब 40 हजार किसान शामिल हुए। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज के अनुसार मेले के पहले दिन में किसानों ने करीब 21.08 लाख रुपये के खरीफ फसलों व सब्जियों की उन्नत व विश्वविद्यालय द्वारा किस्मों के प्रमाणित बीज तथा करीब 46 हजार 600 रुपये के फलदार पौधे व सब्जियों के बीज खरीदे। उल्लेखनीय है कि किसानों को आगामी खरीफ सीजन की फसलों व सब्जियों के बीज तथा फलों की नर्सरी उपलब्ध करवाने के लिए विश्वविद्यालय ने मेला स्थल पर सरकारी बीज एजेंसियों के सहयोग से बीज बिक्री की पर्याप्त व्यवस्था की थी। बीज के अलावा किसानों ने 6500 रुपये के जैव उर्वरक तथा 13 हजार रुपये का कृषि साहित्य भी खरीदा। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने बताया कि मेले में किसानों को विश्वविद्यालय के अनुसंधान फार्मों का भ्रमण करवाकर उन्हें वैज्ञानिक विधि से उगाई गई फसलों के प्रदर्शन प्लॉट दिखाए जा रहे हैं। इस अवसर पर किसानों ने विश्वविद्यालय की ओर से मिट्टी व पानी जांच के लिए की गई व्यवस्था का भी लाभ उठाया और उन्होंने कुल 188 नमूने टैस्ट करवाए। संयुक्त निदेशक विस्तार डॉ. कृष्ण कुमार यादव ने बताया कि मेले में लगाई गई कृषि औद्योगिक प्रदर्शनी किसानों के आकर्षण का विशेष केन्द्र रही। इस प्रदर्शनी में कुल 248 स्टॉलें लगाए गए हैं।